GOVT. DIGVIJAY AUTONOMOUS P.G. COLLEGE,

RAJNANDGAON (C.G.)

DEPARTMENT OF HINDI

PROGRAMME OUTCOMES AND COURSE OUTCOMES
2023-24

शासकीय दिग्विजय स्वशासी स्नातकोत्तर महाविद्यालय
राजनांदगांव (छत्तीसगढ़)

हिन्दी विभाग

(कुलसचिव हेमचंद यादव विश्वविद्यालय, दुर्ग के पत्रांक 4869/अका/2022 दिनांक 3/05/2022 एव प्राचार्य शासकीय दिग्विजय स्वशासी स्नातकोत्तर महाविद्यालय, राजनांदगांव के सूचनादेश दिनांक 20/04/2023 द्वारा सत्र–2023–24 के लिए स्नातक FYUGP (CBCS And Locf Course) हिंदी भाषा एवं हिंदी साहित्य का अनुमोदित पाठ्यक्रम)

(चारवर्षीय स्नातक पाठ्यक्रम (CBCS And LOCF) प्रणाली)

(सत्र–2023–24)

सेमेस्टर प्रणाली

(स्नातक समेस्टर–1, 2, 3, और 4 का हिंदी विषय का संशोधित पाठ्यक्रम)

(स्नातक भाग–3 का पाठ्यक्रम पूर्ववत्)

(डॉ. शंकर मुनि राय)
विभागाध्यक्ष, हिंदी

(डॉ. के. एल. डाण्डेकर)
प्राचार्य

शासकीय दिग्विजय महाविद्यालय, राजनांदगांव

हिंदी विभाग

चारवर्षीय स्नातक पाठ्यक्रम **(CBCS And LOCF)** प्रारूप

(सत्र 2023–24)

विषय : हिन्दी साहित्य

सत्र : 2023–24	स्नातक
सेमेस्टर–1	विषय : हिंदी साहित्य
पाठ्यक्रम का स्वरूप : (DSC-1) मूल पाठ्यक्रम हिंदी	विषय कोड : UBADCT101
पाठ्यक्रम का नाम : प्राचीन हिंदी काव्य	
केडिट : 04	व्याख्यान : 60
अधिकतम अंक : 100 (80+20)	न्यूनतम उत्तीर्णांक : 40 प्रतिशत

Program outcomes : (पाठ्यक्रम प्रतिफल)	सही अर्थ में हिंदी भाषा और साहित्य का विकास आदिकाल से शुरू होता है। इसमें धार्मिक तथा ऐतिहासिक दो प्रकार का साहित्य मिलता है, जो विविध काव्यरूपों में अभिव्यंजित है। मध्यकालीन साहित्य की पृष्ठभूमि के रूप में इसे प्रतिष्ठापित किया जाता है। मध्यकालीन काव्य में भक्तिकाव्य, जहां लोक जागरण को स्वर देनेवाला है वहीं रीति काल अपने लौकिक श्रृंगारिकता, परिदृश्य में तत्कालीन सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक स्थितियों को बेलौस अभिव्यंजित करता है। अतः भाषा–संस्कृति, विचार, मानवता, काव्यत्व, काव्यरूपता, लौकिकता–पारलौकिकता आदि दृष्टियों से इसका अध्ययन अत्यावश्यक है। इसकी विशिष्ट बातें इस प्रकार हैं– • **प्राचीन से यहां तात्पर्य है–आधुनिक काल से पूर्व का काल।** • प्रमुख कवि कबीरदास, जायसी, सूरदास, तुलसीदास और घनानंद। • अन्य कवि विद्यापति, रहीम और रसखान।
(Program specific outcomes (Pso) : (पाठ्यक्रम वैशिष्ट्य प्रतिफल)	• यह प्रश्नपत्र मध्यकालीन हिंदी साहित्य की पृष्ठभूमि को रेखांकित करता है। इसके अंतर्गत भक्तिकाल और रीतिकाल का संतकाव्य, भक्ति दर्शन और सूफी साहित्य शामिल है। • इसमें कबीर की भक्ति, जायसी का सूफी दर्शन, तुलसी का समन्वय दर्शन और घनानंद का प्रेमदर्शन प्रमुख पाठ्य विषय हैं। • इसके अध्ययन से विद्यार्थियों में साहित्यिक रुचि और साहित्य दर्शन का बोध विकसित होगा। • विद्यापति की भक्ति, रहीम के नीतिपरक दोहे, और रसखान की श्रीकृष्ण भक्ति के अध्ययन से साहित्य के विविध पक्षों का ज्ञान होना स्वाभाविक है।

इकाई	व्याख्यान	पाठ्य विषय
1	20	प्राचीन हिंदी काव्य की पृष्ठभूमि : विविध काव्य धाराएं और प्रमुख कवि–सगुण और निर्गुण, ज्ञानाश्रयी और प्रेमाश्रयी, रामभक्ति और कृष्ण भक्ति काव्यधाराएं। कबीर, जायसी, सूरदास और तुलसीदास की साहित्यिक विशेषताएं।
2	20	कबीरदास की प्रमुख 50 साखियों और 'पद्मावत' के नागमती वियोग खण्ड की व्याख्या।

विभागाध्यक्ष (हिंदी)
शासकीय दिग्विजय स्नातकोत्तर महाविद्यालय

शासकीय दिग्विजय महाविद्यालय, राजनांदगांव

हिंदी विभाग

चारवर्षीय स्नातक पाठ्यक्रम **(CBCS And LOCF)** प्रारूप

(सत्र 2023–24)

विषय : सामान्य चयन (Generic Elective)-1

सत्र : 2023–24	स्नातक
सेमेस्टर–1	विषय : हिंदी (व्याकरणिक)
पाठ्यक्रम का स्वरूप : विषय : GE	विषय कोड : UBAGET101
पाठ्यक्रम का नाम : रचनात्मक हिंदी (व्याकरणिक)	
केडिट : 04	व्याख्यान : 60
अधिकतम अंक : 100 (80 +20)	न्यूनतम उत्तीर्णांक : 40 प्रतिशत

शीर्षक	पाठ्य विषय : रचनात्मक हिंदी–1 (व्याकरणिक)
Program outcomes : (पाठ्यक्रम प्रतिफल)	• लिखना एक सामान्य कला है। इसलिए सामान्य चयन (Generic Elective) पाठ्यक्रम के अंतर्गत प्रस्तुत पाठ्य विषय उन विद्यार्थियों को ध्यान में रखकर तैयार किया गया है, जो प्रायः हिंदी भाषा और साहित्य के नियमित विद्याार्थी नहीं होते हैं, किन्तु उनकी जन्मजात प्रतिभा सृजनात्मक अथवा काव्यात्मक होती है। • इस कम में भाषा की आधी–अधूरी जानकारी के कारण वे लेखन कार्य में प्रायः पिछड़ जाते हैं। ऐसे विद्यार्थियों को लगता है कि यदि उन्हें प्रारंभ में भाषा की बारीकियों की जानकारी दी गई होती तो वे अच्छे लेखक–साहित्यकार बन सकते थे।
(Program specific outcomes (Psos) : (पाठ्यक्रम वैशिष्ट्य प्रतिफल)	• इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य हिंदी भाषा की तकनीकि जानकारी देते हुए उसकी सामान्य अशुद्धियों तथा उसकी व्याकरणिक शर्तों से विद्यार्थियों को परिचय कराना है। • इसके अध्ययन–अध्यापन से विद्यार्थियों की सृजनात्मक प्रतिभा का विकास तो होगा ही कार्यालयीन पत्राचार में भी दक्षता आयेगी।

इकाई	व्याख्यान	पाठ्य विषय
1	15	• संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण किया, और अव्यय का भेद सहित अध्ययन • हिंदी वर्तनी की समस्याएं और समाधान
2	15	• हिंदी भाषा की अशुद्धियां : प्रकार एवं समाधान • व्याकरणिक अशुद्धियों की पहचान एवं समाधान
3	15	• मुहावरा : सामान्य अर्थ और प्रयोग • लोकोक्तियां : अर्थ एवं प्रयोग
4	15	• कार्यालयीन पत्राचार : प्रमुख कार्यालयीन पत्र–आवेदन, आदेश, अधिसूचना, अनुस्मारक, परिपत्र, और ज्ञापन ।

संदर्भग्रंथः

1. सरल व्यावहारिक हिंदी– डॉ. शंकर मुनि राय
2. हिंदी व्याकरणमाला–केआर महिया एवं विमलेश शर्मा

विभागाध्यक्ष (हिंदी)
स्नातकोत्तर महाविद्यालय
राजनांदगांव (छ.ग.)

चारवर्षीय स्नातक पाठ्यक्रम (CBCS And LOCF) प्रारूप

(सत्र 2023–24)

विषय : SKILL ENHANCEMENT COURSE (SEC-1)

(बौद्धिक क्षमता विकास पाठ्यक्रम)

सत्र : 2023–24	स्नातक
सेमेस्टर–1	विषय : व्यावहारिक हिंदी–1
पाठ्यक्रम का स्वरूप : (SEC-1)	विषय कोड : UBSEC 104
पाठ्यक्रम का नाम : व्यावहारिक हिंदी	
क्रेडिट : 02	व्याख्यान : 30
अधिकतम अंक : 50 (40+10)	न्यूनतम उत्तीर्णांक : 40 प्रतिशत
Program outcomes : (पाठ्यक्रम प्रतिफल)	**इस पाठ्यक्रम के निम्नलिखित उद्देश्य हैं–** • (विद्यार्थियों की आंतरिक गुणवत्ता को विकसित करने मे सहायता मिलेगी • हिंदी भाषा की वास्तविक प्रकृति और उसकी वैज्ञानिकता की समझ विकसित होगी। • हिंदी शब्दों के समुचित उच्चारण की कला और उसके संप्रेषण का अभ्यास होगा। • हिंदी भाषा को वैज्ञानिक तरीके से अन्य भाषा में रुपांतरित करने का भाषायी कौशल विकसित होगा। • भाषान्तरण (अनुवाद) की कला से एकाधिक भाषा की प्रकृति को समझने में मदद मिलेगी।
(Program specific outcomes (Psos) : (पाठ्यक्रम वैशिष्ट्य प्रतिफल)	व्यावहारिक हिंदी से यहां तात्पर्य है हिंदी भाषा का वह स्वरुप जो वास्ताव में विद्यार्थी के जीवन में उपयोगी है। भाषा की यह उपयोगिता उसके लिए प्रतियोगी परीक्षाओं से लेकर रोजगारी व्यवहार में देखने को मिलती हैं। इसलिए यह पाठ्यक्रम विद्यार्थी को एक तरह से उसके दैनिक व्यवहार से लेकर कार्यालयीन कार्य करने के लिए प्रशिक्षित करेगा।

पाठ विषय

इकाई	व्याख्यान	पाठ्य विषय
1	15	पाठ–1 : व्यावहारिक हिंदी का अर्थ एवं स्वरूप, हिंदी भाषा का व्यावहारिक क्षेत्र, रोजगारी हिंदी, पाठ–2 : कार्यालयीन हिंदी, हिंदी के विविध नाम और उसके विविधि रूप।
2	15	पाठ–3 : हिंदी भाषा की भाषागत विशेषताएं : वर्णमाला की वैज्ञानिकता, स्वर एवं व्यंजन का वर्गीकरण, उच्चारण स्थल, पाठ–4 : घोष और अघोष वर्ण, अल्पप्राण एवं महाप्राण ध्वनियां।

संदर्भ ग्रंथ

1. सरल व्यावहारिक हिंदी– डॉ. शंकर मुनि राय

विभागाध्यक्ष (हिंदी)
शासकीय दिग्विजय स्वशासी
स्नातकोत्तर महाविद्यालय
राजनांदगांव (छ.ग.)

शासकीय दिग्विजय महाविद्यालय, राजनांदगांव
हिंदी विभाग
चारवर्षीय स्नातक पाठ्यक्रम (CBCS And LOCF) प्रारूप
(सत्र 2023–24)
विषय : हिन्दी भाषा

सत्र : 2023–24	**स्नातक : बीएससी / बीसीए**
सेमेस्टर–1	विषय : सामान्य हिंदी
पाठ्यक्रम का स्वरूप : AECC-1 (योग्यता अभिवृद्धि अनिवार्य पाठ्यक्रम	विषय कोड :
पाठ्यक्रम का नाम : हिंदी भाषा	
क्रेडिट : 02	**व्याख्यान : 30**
अधिकतम अंक : 50 (40+10)	न्यूनतम उत्तीर्णांक :40 प्रतिशत
Program outcomes : (पाठ्यक्रम प्रतिफल)	व्याकरण का बुनियादी ज्ञान, संप्रेषण, कौशल, सामाजिक संदेश एवं भाषायी दक्षता को ध्यान में रखते हुए यह पाठ्यक्रम प्रस्तावित है। इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों को भाषा बोध और शब्दज्ञान के साथ–साथ हिंदी साहित्य की प्रमुख विधाओं की समझ विकसित करना है। इसके अंतर्गत निम्नलिखित पाठ्य सामग्री शामिल हैं– • कहानी, कविता और व्यंग्य विधा की रचनाएं • पल्लवन, पत्राचार, अनुवाद, पारिभाषिक शब्दावली तथा हिंदी पदनाम। • देवनागरी लिपि की विशेषताएं, तथा संक्षेपण। • मानक हिंदी का स्वरूप, विशेषताएं तथा मानक–अमानक हिंदी के स्वरूप।
(Program specific outcomes (Pso) : (पाठ्यक्रम वैशिष्ट्य प्रतिफल)	• हिंदी भाषा का यह व्यावहारिक प्रश्नपत्र है। • इस प्रश्नपत्र के अध्ययन से भाषा के साथ ही साहित्यिक विधाओं की प्रकृति समझने में भी मदद मिलेगी। • इसके अध्ययन से हिंदी भाषा की बारीकियां समझ में आती हैं। • देवनागरी लिपि की वैज्ञानिक जानकारी से विद्यार्थियों को प्रतियोगी परीक्षाओं में मदद मिलेगी। • इससे कार्यालयीन कार्य में भी लेखकीय त्रुटियों से बचा जा सकता है। • सामान्य व्यवहार में हिंदी के विविध रूप प्रचलित हैं। अतः हिंदी का मानक रूप समझाने के लिए यह पाठ्य सामग्री अत्यंत आवश्यक है।

इकाई	व्याख्यान	पाठ्य विषय
1	08	• **कहानी** : ईदगाह–मुंशी प्रेमचंद • पल्लवन एवं पत्राचार

विभागाध्यक्ष (हिंदी)
शासकीय दिग्विजय स्नातकोत्तर महाविद्यालय
राजनांदगांव (छ.ग.)

शासकीय दिग्विजय महाविद्यालय, राजनांदगांव

हिंदी विभाग

चारवर्षीय स्नातक पाठ्यक्रम **(CBCS And LOCF)** प्रारूप

(सत्र 2023–24)

विषय : हिन्दी साहित्य–2

सत्र : 2023–24	स्नातक
सेमेस्टर–2	विषय : हिंदी साहित्य
पाठ्यक्रम का स्वरूप : **(DSC-2)**	विषय कोड : UBADCT201
पाठ्यक्रम का नाम : हिंदी कथा साहित्य	
केडिट : 04	व्याख्यान : 60
अधिकतम अंक : 100 (80 +20)	न्यूनतम उत्तीर्णांक : 40 प्रतिशत

Program outcomes : (पाठ्यक्रम प्रतिफल)	हिंदी गद्य की प्रमुख विधाओं का इतना द्रुत विकास इनकी लोकप्रियता का प्रमाण प्रस्तुत करता है। इसमें आधुनिक जीवन, अपनी विविध कमियों के साथ यथार्थ रूप में अभिव्यंजित हुआ है। जीवन की अनुभूतियां, संवेदनाओं तथा विविध परिस्थितियों के साक्षात्कार के लिए इनका अध्ययन सर्वथा अपेक्षित है। अतः यहां गद्य की निम्नलिखित पाठ्य सामग्री का अध्ययन अपेक्षित है– • हिंदी की प्रमुख दो विधाएं–कहानी और उपन्यास का अध्ययन। • आलोचनात्मक और व्याख्यात्मक भाषा–ज्ञान। • भाषायी समझ और विधात्मक विभेद का अंतर ज्ञान।
(Program specific outcomes (Psos) : (पाठ्यक्रम वैशिष्ट्य प्रतिफल)	• इसके अंतर्गत हिंदी की कुल आठ कहानियों के साथ मुंशी प्रेमचंद के एक उपन्यास (गबन) का अध्ययन अपेक्षित है। • इनके अध्ययन से हिंदी गद्य की प्रमुख दो गद्य विधाओं की प्रकृति और दोनों रचनागत विशेषताओं का ज्ञान होगा। इसके अंतर्गत व्याख्या और आलोचनात्मक प्रश्न पूछकर विद्यार्थियों की भाषा और रचनात्मक योग्यता का परिचय लिया जा सकता

इकाई	व्याख्यान	पाठ्य विषय
1	15	हिंदी कहानी तथा उपन्यास का उद्‌भव और विकास उपन्यास : **'गबन'** – मुंशी प्रेमचंद।
2	15	कहानी– • **'झलमला'** –डॉ. पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी • **आकाशदीप**– जयशंकर प्रसाद • **परदा**– यशपाल
3	15	कहानी– • **लाल पान की बेगम**–फणीश्वरनाथ रेणु • **मलबे का मालिक**–मोहन राकेश • **चीफ की दावत**–भीष्म साहनी
4	15	कहानी– • **जली हुई रस्सी**–गुलशेर खां शानी • **नकली हीरे**–मन्नू भंडारी

विभागाध्यक्ष (हिंदी)
शासकीय दिग्विजय स्नातकोत्तर महाविद्यालय
राजनांदगांव (छ.ग.)

शासकीय दिग्विजय महाविद्यालय, राजनांदगांव

हिंदी विभाग

चारवर्षीय स्नातक पाठ्यक्रम **(CBCS And LOCF)** प्रारूप

(सत्र 2023–24)

विषय : सामान्य चयन (Generic Elective)-2

सत्र : 2023–24	स्नातक
सेमेस्टर–2	विषय : हिंदी
पाठ्यक्रम का स्वरूप : विषय : GE रचनात्मक हिंदी	विषय कोड : UBAGET201
पाठ्यक्रम का नाम : रचनात्मक हिंदी (काव्यांग)	
क्रेडिट : 04	व्याख्यान : 60
अधिकतम अंक : 100 (80 +20)	न्यूनतम उत्तीर्णांक : 40 प्रतिशत

Program outcomes : (पाठ्यक्रम प्रतिफल)	• लिखना एक सामान्य कला है। इसलिए सामान्य चयन (Generic Elective) पाठ्यक्रम के अंतर्गत प्रस्तुत पाठ्य विषय उन विद्यार्थियों को ध्यान में रखकर तैयार किया गया है, जो प्रायः हिंदी भाषा और साहित्य के नियमित विद्यार्थी नहीं होते हैं, किन्तु उनकी जन्मजात प्रतिभा सृजनात्मक अथवा काव्यात्मक होती है। • इस क्रम में भाषा की आधी–अधूरी जानकारी के कारण वे लेखन कार्य में प्रायः पिछड़ जाते हैं। ऐसे विद्यार्थियों को लगता है कि यदि उन्हें प्रारंभ में भाषा की बारीकियों की जानकारी दी गई होती तो वे अच्छे लेखक–साहित्यकार बन सकते थे।
(Program specific outcomes (Psos) : (पाठ्यक्रम वैशिष्ट्य प्रतिफल)	• इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य हिंदी भाषा की तकनीकि जानकारी देते हुए उसकी सामान्य अशुद्धियों तथा उसकी व्याकरणिक शर्तों से विद्यार्थियों को परिचय कराना है। • इसके अध्ययन–अध्यापन से विद्यार्थियों की सृजनात्मक प्रतिभा का विकास तो होगा ही कार्यालयीन पत्राचार में भी दक्षता आयेगी।

इकाई	व्याख्यान	पाठ्य विषय
1	15	• रस : अर्थ, परिभाषा, भेद और स्वरूप • रसों का सोदाहरण विवेचन
2	15	• छंद : अर्थ, भेद एवं प्रमुख प्रकार • मात्रिक, वर्णिक और मुक्त छंदों का परिचय
3	15	• अलंकार : अर्थ, स्वरूप और भेद • शब्दालंकार, अर्थालंकार, उभयालंकार –सोदाहरण विवेचन
4	15	• काव्य रचना–अभ्यास : भाव–भाषा, बिम्ब–प्रतीक चयन • दोहा, सोरठा, चौपाई, सवैया और हरिगीतिका छंदों की रचना करना।

संदर्भग्रंथ :

1. काव्य–शास्त्र–सं. हजारी प्रसाद द्विवेदी
2. सरल हिंदी काव्य–शास्त्र–सं. मनोज कुमार मिश्र

विभागाध्यक्ष (हिंदी)
शासकीय दिग्विजय महाविद्यालय
राजनांदगांव (छ.ग.)

शासकीय दिग्विजय महाविद्यालय, राजनांदगांव

हिंदी विभाग

चारवर्षीय स्नातक पाठ्यक्रम **(CBCS And LOCF)** प्रारूप

(सत्र 2023–24)

विषय : **SKILL ENHANCEMENT COURSE (SEC-2)**

(बौद्धिक क्षमता विकास पाठ्यक्रम)

सत्र : 2023–24	स्नातक
सेमेस्टर–2	विषय : व्यावहारिक हिंदी–2
पाठ्यक्रम का स्वरूप : **(SEC-2)**	विषय कोड : UBSEC204
पाठ्यक्रम का नाम : व्यावहारिक हिंदी	
केडिट : **02**	व्याख्यान : **30**
अधिकतम अंक : 50 (40+10)	न्यूनतम उत्तीर्णांक : 40 प्रतिशत

Program outcomes : (पाठ्यक्रम प्रतिफल)	इस पाठ्यक्रम के निम्नलिखित उद्देश्य हैं– • (विद्यार्थियों की आंतरिक गुणवत्ता को विकसित करने मे सहायता मिलेगी • हिंदी भाषा की वास्तविक प्रकृति और उसकी वैज्ञानिकता की समझ विकसित होगी। • हिंदी शब्दों के समुचित उच्चारण की कला और उसके संप्रेषण का अभ्यास होगा। • हिंदी भाषा को वैज्ञानिक तरीके से अन्य भाषा में रुपांतरित करने का भाषायी कौशल विकसित होगा। • भाषान्तरण (अनुवाद) की कला से एकाधिक भाषा की प्रकृति को समझने में मदद मिलेगी।
(Program specific outcomes (Psos) : (पाठ्यक्रम वैशिष्ट्य प्रतिफल)	व्यावहारिक हिंदी से यहां तात्पर्य है हिंदी भाषा का वह स्वरुप जो वास्ताव में विद्यार्थी के जीवन में उपयोगी है। भाषा की यह उपयोगिता उसके लिए प्रतियोगी परीक्षाओं से लेकर रोजगारी व्यवहार में देखने को मिलती हैं। इसलिए यह पाठ्यक्रम विद्यार्थी को एक तरह से उसके दैनिक व्यवहार से लेकर कार्यालयीन कार्य करने के लिए प्रशिक्षित करेगा।

इकाई	व्याख्यान	पाठ्य विषय
1	15	पाठ–1 : कार्यालयीन पत्र : पत्र के प्रकार एवं स्वरूप, आवेदन पत्र, पाठ–2 : अधिसूचना, आदेश, ज्ञापन, अनुस्मारक एवं टिप्पणी लेखन, विधि एवं नमूने।
2	15	पाठ–3 : उद्घोषणा लेखन : हिंदी और छत्तीसगढ़ी में उद्घोषणा लेखन। अर्थ स्वरूप एवं सावधानियां, पाठ–4 : आकाशवाणी उद्घोषणा, रेलवे उद्घोषणा ।

संदर्भ ग्रंथ

1. सरल व्यावहारिक हिंदी– डॉ. शंकर मुनि राय

विभागाध्यक्ष (हिंदी)
शासकीय दिग्विजय स्वशासी
स्नातकोत्तर महाविद्यालय
राजनांदगांव (छ.ग.)

शासकीय दिग्विजय महाविद्यालय, राजनांदगांव

हिंदी विभाग

FYUGP (CBCS And LOCF COURSE)

विषय : हिन्दी साहित्य–3

सत्र : 2023–24	स्नातक
सेमेस्टर–3	विषय : (DSC-3) हिंदी साहित्य (अर्वाचीन हिंदी काव्य)
विषय : (DSC-3) हिंदी साहित्य (अर्वाचीन हिंदी काव्य)	विषय कोड : UGHND 201
केडिट : 04	व्याख्यान : 60
अधिकतम अंक : 100 (ESE 80+IA20	न्यूनतम उत्तीर्णांक : 40%

शीर्षक	पाठ्य विषय : हिंदी साहित्य–3
Program outcomes : (पाठ्यक्रम प्रतिफल)	आधुनिक काव्य आधुनिकता की समस्त विशेषताओं को समेटे हुए है। स्वतंत्रता प्राप्ति के पूर्व की भाव–भाषा शिल्प, अंतर्वस्तु संबंधी समस्त विकास धारा यहां सजीव रूप में देखी जा सकती हैं। इसे अनदेखा करना मनुष्य की विकास यात्रा को नजर अंदाज करना है। इस यात्रा के साक्षात्कार के लिए आधुनिक काव्य का अध्ययन अपेक्षित ही नहीं अपितु अनिवार्य है।
(Program specific outcomes (Psos) : (पाठ्यक्रम वैशिष्ट्य प्रतिफल)	• इस पाठ्यक्रम के अंतर्गत आधुनिक हिंदी कवि और कविता की पृष्ठभूमि तथा उसकी प्रकृति से विद्यार्थियों को अवगत कराना अपना उद्देश्य है। • इसमें कुल पांच प्रमुख कवि मैथिलीशरण गुप्त, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', सुमित्रानंदन 'पंत', माखनलाल चतुर्वेदी और सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' की प्रतिनिधि कविताएं शामिल की गई हैं। • इन कवियों की काव्यगत प्रकृति को आलोचनात्मक और व्याख्यात्मक तरीके से समझाने से विद्यार्थियों का बोध जागृत होगा।

इकाई	व्याख्यान	पाठ्य विषय
1	15	कवि और कविताएं • **मैथिलीशरण गुप्त**–नर हो न निराश करो मन को, सखि! वे मुझसे कहकर जाते!, किसान • **सूर्यकांत त्रिपाठी निराला**–वीणा वादिनी वर दे, वह तोड़ती पत्थर, भिक्षुक।
2	15	• **सुमित्रा नंदन 'पंत'**–सुख–दुख, ताज, ग्रामश्री
3	15	• **माखनलाल चतुर्वेदी**–पुष्प की अभिलाषा, उलाहना, निःशस्त्र सेनानी
4	15	• **स.ही. वात्स्यायन 'अज्ञेय'**–घर, चांदनी,

शासकीय दिग्विजय महाविद्यालय, राजनांदगांव

हिंदी विभाग

FYUGP (CBCS And LOCF COURSE)

सत्र : 2023–24	स्नातक
सेमेस्टर–3	विषय : DSE-1 (छायावादः स्वरूप एवं विशेषताएं)
पाठ्यक्रम का स्वरूप विषय : DSE-1 (छायावादः स्वरूप एवं विशेषताएं)	विषय कोड : UBADET 301
केडिट : 04	व्याख्यान : 60
अधिकतम अंक : 100 ESE 80+IA 20	न्यूनतम उत्तीर्णांक : 40 %

शीर्षक	पाठ्य विषय : DISCIPLINE SPECIFIC ELECTIVE COURSE (DSE-1)
Program outcomes : (पाठ्यक्रम प्रतिफल)	• हिंदी कविता के इतिहास में छायावाद के नाम से अभिहित कालखंड इतना महत्वपूर्ण है कि किसी न किसी रूप में हर कोई पढ़ना ही चाहता है। • यह वह काल है जहां से हिंदी कविता की नई दिशा और दशा प्रारंभ होती है। यह नवीन चेतना का साहित्यिक काल है। • इस काल में प्रसाद, पंत, निराला और महादेवी के नाम से प्रख्यात काव्यकार हिंदी कविता के आधार स्तंभ माने जाते है।
(Program specific outcomes (Psos) : (पाठ्यक्रम वैशिष्ट्य प्रतिफल)	• इनका अध्ययन–अध्यापन इसलिए जरूरी है कि इसमें मानवीय संवेदना का जो स्वर है, वह शास्त्रीय काव्य परंपरा से हटकर है। • कविता में प्रकृति का मानवीकरण इस काल की कविता की प्रमुख विशेषता मानी जाती है। कविता की यह विशेषता विद्यार्थियों में मानवीय संवेदना विकसित करने में सहायक सिद्ध होगी। • छायावादी कविता की एक अन्य प्रमुख विशेषता राष्ट्रीय चेतना भी है। अतः इसके अध्ययन–अध्यापन से पाठकों में राष्ट्रीयता की भावना भी जागृत की जा सकती है।

इकाई	व्याख्यान	पाठ्य विषय
1	15	छायावाद का अर्थ, ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, स्वरुप एवं विशेषताएं
2	15	प्रमुख कवि : प्रसाद, पंत, निराला और महादेवी वर्मा उनकी कृतियां एवं काव्यगत विशेषताएं ।
3	15	प्रमुख कविताएं : चिंता सर्ग, नौका विहार, जागो फिर एक बार, जो तुम आ जाते एक बार।
4	15	श्रद्धा सर्ग, सुख–दुख, सरोज स्मृति, जाग तुझको दूर जाना।

संदर्भग्रंथ–

1. छायावाद और उसके कवि– संपादक– विजय बहादुर सिंह, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
2. निराला की साहित्य साधना –रामबिलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
3. छायावाद–डॉ. उदयभानु सिंह, सामयिक प्रकाशन दिल्ली
4. प्रसाद काव्य में बिम्ब योजना–रामकृष्ण अग्रवाल, राजकमल प्रकाशन

शासकीय दिग्विजय महाविद्यालय, राजनांदगांव

हिंदी विभाग

FYUGP (CBCS And LOCF COURSE)

विषय : Skill Enhancement Course (SEC-3)

सत्र : 2023–24	स्नातक
सेमेस्टर–3	विषय : (SEC-3) (संभाषण कला)
पाठ्यक्रम का स्वरूप : (SEC-3) (संभाषण कला)	विषय कोड : UBSEC – 0311
केडिट : 02	व्याख्यान : 30
अधिकतम अंक : 50(ESE 40 +IA 10)	न्यूनतम उत्तीर्णांक : 40%

शीर्षक	पाठ्य विषय : संभाषण कला (SEC-3)
Program outcomes : (पाठ्यक्रम प्रतिफल)	यह पाठ्यक्रम हिंदी भाषा की मौखिक प्रकृति को ध्यान में रखकर तैयार किया गया है। विचार अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम भाषा ही है, जिसमें मौखिक अभिव्यक्ति का विशेष महत्व है। मौखिक अभिव्यक्ति में शब्दों के सही उच्चारण और प्रस्तुति का विशेष महत्व है। इसके लिए शब्दार्थ, ध्वनि, उच्चारण और लहजे का ज्ञान होना बहुत आवश्यक है। प्रस्तुत पाठ्यक्रम इन्हीं सब बातों को ध्यान में रखकर प्रशिक्षण के लिए तैयार किया गया है।
(Program specific outcomes (Psos) : (पाठ्यक्रम वैशिष्ट्य प्रतिफल)	• इस पाठ्यक्रम के अध्ययन से विद्यार्थियों की भाषिक क्षमता का विकास होगा । • भाषा की स्वभाविक प्रकृति से परिचित होने का परिणाम यह होगा कि सही शब्दोच्चारण से विद्यार्थियों की वक्तृत्व कला विकसित होगी। • यह एक व्यावहारिक पाठ्यक्रम है जो प्रत्यक्ष रूप से साबित करेगा कि किसी विद्यार्थी को भाषा–शैली का कितना ज्ञान है।

इकाई	व्याख्यान	पाठ्य विषय
1	08	संभाषण का अर्थ। संभाषण के विभिन्न रूप–वार्तालाप, व्याख्यान, वाद विवाद, एकालाप, अवाचिक अभिव्यक्ति, जन संबोधन।
2	08	जन सम्पर्क में वाक्कला की उपयोगिता] संभाषण कला के प्रमुख उपादान – यथेष्ठ भाषा ज्ञान, मानक उच्चारण, सटीक प्रस्तुति, अन्तराल ध्वनि (वाल्यूम), वेग, लहजा (एक्सेण्ट)।
3	08	संभाषण कला के विभिन्न रूप, उद्घोषणा कला (अनाउन्समेंट), आंखों देखा, हाल (कमेन्ट्री), संचालन (एंकरिंग) वाचन कला, समाचार वाचन (रेडियो, टीवी.)
4	06	वाद–विवाद प्रतियोगिता एवं समूह

शासकीय दिग्विजय महाविद्यालय, राजनांदगांव

हिंदी विभाग

(FYUGP (CBCS And LOCF COURSE)

विषय : **Skill Enhancement Course (SEC-4)**

सत्र : 2023–24	स्नातक
सेमेस्टर–4	विषय : : **(SEC-4)** (अनुवाद : सिद्धांत और प्रविधि)
पाठ्यक्रम का स्वरूप : **(SEC-4)** (अनुवाद : सिद्धांत और प्रविधि)	विषय कोड : UBSEC-411
क्रेडिट : 02	व्याख्यान : 30
अधिकतम अंक : 50 **(ESE 40+IA 10)**	न्यूनतम उत्तीर्णांक : 40%

शीर्षक	पाठ्य विषय : अनुवाद : सिद्धांत और प्रविधि (SEC-4)
Program outcomes : (पाठ्यक्रम प्रतिफल)	• समय की मांग है कि विद्यार्थियों को एकाधिक भाषा का समुचित ज्ञान कराया जाए। इसके अभाव में शिक्षा का वैश्विक स्वरुप निर्धारित नहीं किया जा सकता है। • अतः हमारे जीवन में अनुवादी ज्ञान का होना अति आवश्यक है। इस पाठ्यक्रम में अनुवाद की बारीकियों को समझाने और सीखाने का प्रयास किया जाएगा।
(Program specific outcomes (Psos) : (पाठ्यक्रम वैशिष्ट्य प्रतिफल)	• नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुसार क्षेत्रीय भाषाओं में अध्ययन–अध्यापन की जो परिकल्पना है, उसके लिए जरूरी हो गया है कि एकाधिक भाषाओं की जानकारी को अनिवार्य किया जाए। इस पाठ्यक्रम से बहुभाषी अध्ययन के प्रति रूचि बढ़ेगी। • कार्यालयीन पत्रों का अनुवाद करने जैसा कौशल विकसित करना इस पाठ्यक्रम का व्यावहारिक पक्ष है।

इकाई	व्याख्यान	पाठ्य विषय
1	08	अनुवाद का अर्थ, स्वरूप एवं प्रकृति। अनुवाद कार्य की आवश्यकता एवं महत्त्व। बहुभाषी समाज में परिवर्तन तथा बौद्धिक–सांस्कृतिक आदान–प्रदान में अनुवाद कार्य की भूमिका।
2	08	: अनुवाद के प्रकार : शाब्दिक अनुवाद, भावानुवाद, छायानुवाद एवं सारानुवाद। अनुवाद–प्रक्रिया के तीन चरण – विश्लेषण, अंतरण एवं पुनर्गठन।
3	08	सर्जनात्मक साहित्य के अनुवाद और तकनीकी अनुवाद में अन्तर। गद्यानुवाद एवं काव्यानुवाद में संरचनात्मक भेद। व्यावहारिक अनुवाद : किन्हीं दो अनूदित कृतियों का समीक्षात्मक अध्ययन।
4	06	कार्यालयीन अनुवाद : शासकीय पत्र/अर्धशासकीय पत्र/परिपत्र (सर्कुलर)/ज्ञापन (प्रजेंटेशन)/कार्यालय आदेश, अधिसूचना। पारिभाषिक शब्दावली के निर्माण के सिद्धान्त,। विधि, मानविकी बैंक एवं रेलवे में प्रयुक्त होने वाले प्रमुख पारिभाषिक शब्दावली तथा प्रमुख वाक्यांश के अंग्रेजी तथा हिन्दी रूप।

शासकीय दिग्विजय महाविद्यालय, राजनांदगांव

हिंदी विभाग

FYUGP (CBCS And LOCF COURSE)

सत्र : 2023–24	स्नातक
सेमेस्टर–4	विषय : DSE-2 (हिंदी साहित्य और साहित्यकार)
पाठ्यक्रम का स्वरूप विषय : DSE-2 (हिंदी साहित्य और साहित्यकार)	विषय कोड : UBAPET–401
क्रेडिट : 04	व्याख्यान : 60
अधिकतम अंक : 100 ESE 80+IA 20	न्यूनतम उत्तीर्णांक : 40 %
शीर्षक	पाठ्य विषय : DISCIPLINE SPECIFIC ELECTIVE COURSE (DSE-2)

Program outcomes : (पाठ्यक्रम प्रतिफल)	• हिंदी साहित्य के अध्येत्ताओं से अपेक्षित कि वे हिंदी की साहित्यिक पृष्ठभूमि को समझें, इसके लिए ऐतिहासिक रचना और रचनाकारों की जानकारी के लिए प्रस्तुत पाठ्य सामग्री तैयार की गई है। • पाठ्यक्रम में हिंदी के आरंभिक काव्यकारों तथा आधुनिक गद्यकारों का साहित्यिक परिचय करना अपना उद्देश्य है। • आधुनिक गद्य विधाओं की जानकारी के क्रम में उनकी रचना प्रकिया को समझाने प्रयास किया जाएगा।
(Program specific outcomes (Psos) : (पाठ्यक्रम वैशिष्ट्य प्रतिफल)	• इस पाठ्यक्रम के अध्ययन–अध्यापन से हिंदी साहित्य की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि स्पष्ट होगी, जो प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए बहुत ही उपयोगी सिद्ध हो सकती है। • आधुनिक हिंदी के प्रमुख गद्य और गद्यकारों की रचना प्रकृति से अवगत कराना इसलिए भी अनिवार्य है कि यह विशेषता हिंदी साहित्य की सामान्य प्रकृति में शामिल है। • बीसवीं शताब्दी में हिंदी गद्य में जिन नवीन विधाओं का जन्म हुआ है, उनकी रचना प्रकृति के अध्ययन–अध्यापन से विद्यार्थियों में गद्य की विकास–यात्रा के प्रति समझ विकसित होगी।

इकाई	व्याख्यान	पाठ्य विषय
1	15	**आदिकालीन एवं भक्तिकालीन हिंदी साहित्य और साहित्यकार** : रचना और रचनाकारों का साहित्यिक परिचय–पृथ्वीराज रासो और परमाल रासो। भक्तिकालीन कवि कबीर, सूर, जायसी, तुलसी का साहित्यिक परिचय।
2	15	**आधुनिक हिंदी गद्य और गद्यकार** : प्रमुख रचनाकारों का साहित्यिक परिचय– हजारी प्रसाद द्विवेदी, आचार्य रामचंद्र शुक्ल, प्रेमचंद, फणीश्वरनाथ 'रेणु'।
3	15	**छायावादी हिंदी कवि और काव्य** : साहित्यिक परिचय–जयशंकर प्रसाद, सुमित्रानंदन 'पंत', सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' और महादेवी वर्मा।
4	15	**आधुनिक हिंदी की नवीन गद्य विधाएं** : सामान्य जानकारी–रेखाचित्र, संस्मरण, डायरी और पत्र।

शासकीय दिग्विजय महाविद्यालय, राजनांदगांव

हिंदी विभाग

FYUGP (CBCS And LOCF COURSE)

ABILITY ENHANCEMENT COMPULSORY COURSE (AECC-4)

(योग्यता अभिवृद्धि अनिवार्य पाठ्यक्रम–4

सत्र : 2023–24	स्नातक :
सेमेस्टर–4	विषय : **AECC-4 Hindi language** (योग्यता अभिवृद्धि अनिवार्य पाठ्यक्रम) हिंदी भाषा
पाठ्यक्रम का स्वरूप : **AECC_4 Hindi language** (योग्यता अभिवृद्धि अनिवार्य पाठ्यक्रम) हिंदी भाषा	विषय कोड : UBAECC 001
क्रेडिट : 2	व्याख्यान : 30
अधिकतम अंक : 50 **(ESE 40+IA 10)**	न्यूनतम उत्तीर्णांक : 40%

शीर्षक	पाठ्य विषय : (योग्यता अभिवृद्धि अनिवार्य पाठ्यक्रम–4
Program outcomes : (पाठ्यक्रम प्रतिफल)	• यह पाठ्यक्रम विद्यार्थियों के भाषा कौशल की परख पर आधारित है। • साथ ही हिंदी निबंध विधा की प्रकृति की जानकारी होगी। • इसके अध्ययन से लेखकीय विकास की समझ विकसित होगी। • कार्यालयीन भाषा की प्रकृति के साथ ही हिंदी के विविध स्वरूपों की जानकारी मिलेगी। • किसी भी घटना, प्रसंग या आयोजन का सारतत्व लिखने की समझ विकसित होगी।
Program specific outcomes (Pso) : (पाठ्यक्रम वैशिष्ट्य प्रतिफल) :	• इस पाठ्यक्रम से विद्यार्थियों में भाषा कौशल के साथ ही हिंदी निबंध की साहित्यिक प्रकृति को समझने मे मदद मिलेगी। • संकलित निबंधों के अध्ययन से महात्मा गांधी, आचार्य बिनोबा भावे, आचार्य नरेन्द्र देव, वासुदेव शरण अग्रवाल, भगवत शरण उपाध्याय और हरि ठाकुर जैसे निबंधकारों की निबंध शैली को समझने में सुविधा होगी। • हिंदी भाषा के विविध रूपों के अंतर्गत कार्यालयीन भाषा, मीडिया की भाषा, वित एवं वाणिज्य की भाषा की व्यावहारिक प्रकृति से अवगत कराना इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य रहा है। • संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, किया विशेषण, संधि और समास हिंदी के ऐसे आधार पाठ्य–विषय हैं, जिनका उपयोग किसी भी प्रतियोगी परीक्षा के लिए अनिवार्य माना गया है। इसलिए इन्हें पाठ्यक्रम का अंश बनाना अनिवार्य माना गया है।

इकाई	व्याख्यान	पाठ्य विषय
1	08	निम्नलिखित पांच लेखकों के एक–एक निबंध पाठ्यक्रम में सम्मिलित होंगे–महात्मा गांधी– **चोरी और प्रायश्चित,** आचार्य नरेन्द्र देव– **युवकों का समाज में स्थान**, वासुदेवशरण अग्रवाल–**मातृभमि**, हरि ठाकुर–**डॉ. खूबचंद बघेल**